بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा

1. नमाज़ की तैयारी

- **पहले यह यक़ीन कर लें कि जिस्म, कपड़े और नमाज़ पढ़ने की जगह बिल्कुल पाक हैं** और उन पर कोई नापाकी वाली चीज़ नहीं लगी है क्योंकि तहारत (पाकी) नमाज़ के लिये पहली शर्त है।
- **अब बावुज़ू हो जायें।**
- **अब यह ध्यान करें कि जिस्म शरीयत के हुक्म के मुताबिक़ ढका हुआ है या नहीं।** क्योंकि जितना जिस्म ढका हुआ रखने का हुक्म है उतना ढका हुआ होना नमाज़ की दूसरी शर्त है इसे "सत्र-ए-औरत" कहते हैं। अगर उतना जिस्म ढका हुआ नहीं है या नमाज़ पढ़ते में खुल गया तो नमाज़ नहीं होगी।
- **नमाज़ के लिये क़िबले की तरफ़ रुख़ करके खड़े हो जायें**, यह नमाज़ की तीसरी शर्त है इसे इस्तिक़बाल-ए-क़िबला कहते हैं।
    - क़िबले को रुख़ करके इस तरह खड़े हों कि दोनों पाँव के दरमियान में चार उंगल का फ़ासला हो।

- नमाज़ की चौथी शर्त वक़्त है लिहाज़ा यह यक़ीन कर लें कि जिस वक़्त की नमाज़ पढ़ रहे हैं यह उसका सही वक़्त है या नहीं। यह भी यक़ीन कर लें कि ऐसा वक़्त तो नहीं है कि जिस वक़्त नमाज़ पढ़ना मना या मकरूह है।
- नमाज़ की छः(6) शर्तें , सात (7) फ़र्ज़, कुछ वाजिबात और कुछ सुन्नतें हैं जिनके छूट जाने पर अलग- अलग हुक्म हैं।
    - *नमाज़ की शर्तों में से अगर एक भी पूरी नहीं हो रही हो तो नमाज़ शुरू ही नहीं होगी।*
    - *भूले से फ़र्ज़ छूटने पर नमाज़ फ़ासिद हो जाती है और दोबारा पढ़ी जायेगी।*
    - *भूल से नमाज़ में कोई वाजिब छूट जाये तो नमाज़ फ़ासिद नहीं होती बल्कि सजदा-ए-सहव करने से नमाज़ हो जाती है, मगर जानबूझ कर वाजिब छोड़ने से नमाज़ नहीं होगी और दोबारा पढ़ना वाजिब है।*
    - *नमाज़ में सुन्नत छूट जाने से नमाज़ तो हो जाती है मगर सुन्नत का सवाब नहीं मिलता लेकिन जानबूझ कर सुन्नत छोड़ने से गुनाह होता है।*

2. नीयत

नमाज़ की छः शर्तों में से एक शर्त नीयत है। इसका मतलब है कि दिल में यह इरादा हो कि नमाज़ सिर्फ़ अल्लाह के वास्ते और उसका हुक्म पूरा करने के लिये पढ़ रहा है और यह कि किस वक़्त (यानि फ़ज्र, ज़ुहर वग़ैरा) की कौन सी (यानि फ़र्ज़, सुन्नते वग़ैरा) नमाज़ पढ़ रहा है। बेहतर यह है कि नमाज़ नीयत को ज़ुबान से भी कर लें

- **नमाज़ की नीयत को ज़ुबान से इस तरह कहे-**
    - नीयत की मैने वास्ते अल्लाह तआला के,
    - चार रकआत (या जितनी हों), नमाज़ फ़र्ज़ वक़्त ज़ुहर (या जो भी हो) का,
    - मुँह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़
    - अगर जमाअत से नमाज़ पढ़ रहा है तो भी यह कहे "पीछे इस इमाम के"।

➢ **अब “अल्लाहु अकबर” (तकबीर-ए-तहरीमा) कह कर हाथ बाँध लें।**

3. तकबीर-ए-तहरीमा (फ़र्ज़)

- **“अल्लाहु अकबर”** कहते हुए दोनों हाथ कानों तक ले जायें कि अंगूठे कान की लौ से छू जायें। हाथों को कानों तक उठाना सुन्नत है।
- उंगलियाँ न मिली हुई हों और न ज़्यादा खुली हुई।
- हथेलियाँ क़िबले की तरफ़ हों।

- औरतें कानों तक हाथ उठाने के बजाय सिर्फ़ कंधों तक उठायें।
- अब हाथ नीचे लायें और नाफ़ के नीचे बाँध लें औरतें सीने पर हाथ बाँधें।।
- सीधे खड़े हो जायें और नज़रें सजदे की जगह पर जमा लें इसे **क़ियाम** कहते हैं।

4. क़ियाम

क़ियाम फ़र्ज़ है। इसमें पहले सना पढ़ते हैं फिर तअव्वुज़, फिर तस्मिया। इसके बाद क़िरात की जाती है। जिसमें “**अलहम्द शरीफ़**” पढ़ी जाती है और साथ में सूरत मिलाई जाती है। जमाअत से नमाज़ पढ़ रहें हैं तो क़िरात न करें क्योंकि इमाम की क़िरात ही मुक़तदी की क़िरात है।

- क़ियाम में सीधे खड़े हो जायें और नज़रें सजदे की जगह पर जमा लें और हाथ इस तरह बाँधें कि दाहिनी हथेली बायीं कलाई के सिरे पर हो और बीच की तीन उंगलियाँ बायीं कलाई की पीठ पर और अंगूठे और छोटी ऊँगली से कलाई को पकड़ लें। **हाथ बाँधना सुन्नत है।**
- औरतें हाथ इस तरह बाँधें कि पहले सीने पर बायाँ हाथ रखें उस पर दाहिने हाथ की हथेली रखें।

➢ **क़ियाम में पहले सना पढ़ें (इसका पढ़ना सुन्नत है)**

سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ

ऐ अल्लाह तू पाक है और मैं तेरी तारीफ़ के साथ तुझे याद करता हूँ तेरा नाम बरकत वाला है और तेरी शान बड़ी है और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।

➢ **फिर तअव्वुज़ पढ़ें (इसका पढ़ना सुन्नत है)**

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

मैं अल्लाह की पनाह लेता हूँ शैतान मरदूद से

➢ **फिर तस्मिया पढ़ें (यह पढ़ना सुन्नत है)**

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह निहायत रहमत वाले बेहद रहम फ़रमाने वाले के नाम से।

➢ **इसके बाद क़िरात करें।**

5. क़िरात (फ़र्ज़)

- तीन आयत के बराबर क़िरात फ़र्ज़ है
- क़िरात में क़ुरआन पाक ऐसे पढ़ें कि हर हर्फ़ अपने सही मख़रज और सिफ़ात के साथ अदा हो।
- ज़ेर, ज़बर, पेश, मद और तश्दीद का भी ख़ास ख़्याल रखें।
- क़िरात के लिये यह ज़रूरी है कि ज़बान और होंठों को हरकत देकर क़िरात की जाये।
- कम से कम इतनी आवाज हो कि पढ़ने वाला ख़ुद उसे सुन सके।
- अलहम्द शरीफ़ और सूरत मिलाकर पढ़ने को क़िरात कहते हैं।
- जमाअत से नमाज़ पढ़ते वक़्त क़िरात नहीं करेंगे क्योंकि इमाम की क़िरात ही मुक़तदी की क़िरात है।

➢ **क़िरात में पहले अलहम्द शरीफ़ पढ़ें यह वाजिब है।**

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝٢

सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, जो परवरिश फ़रमाने वाला है सब जहानों का, निहायत रहमत वाला, बेहद रहम फ़रमाने वाला,

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝٣ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝٤

मालिक रोज़े जज़ा का। (ऐ अल्लाह हमें तौफ़ीक़ दे कि) हम तेरी ही बन्दगी करें और तुझ ही से मदद चाहें।

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝٥ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

(हमेशा) हमें सीधी राह चला, उन लोगों की राह जिन पर तूने इनाम फ़रमाया,

غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝٧

न उनकी जिन पर (तेरा) ग़ज़ब हुआ और न गुमराहों की।

➢ **अलहम्द शरीफ़ ख़त्म पर "आमीन" आहिस्ता से कहें।**

➢ **अब सूरत मिलायें – यह वाजिब है।**

- कोई एक सूरत या कम से कम तीन छोटी आयतें या एक बड़ी आयत जो तीन के बराबर हो पढ़ें। जैसे सूरा-ए-इख़लास-

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝١ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝٤

आप फ़रमा दीजिये वह अल्लाह है यकता है (यानि उस जैसा कोई नहीं)। अल्लाह बे-नियाज़ है (सब उसी के मोहताज हैं और वह किसी का मोहताज नहीं)। उसकी कोई औलाद नहीं और वह किसी की औलाद नहीं। और उसका कोई हमसर नहीं।

➢ **अब रुकू में जायें** – क़िरात के बाद तकबीर **"अल्लाहु अकबर"** कहते हुए रुकू में जायें यह तकबीर सुन्नत है।

6. रुकू (फ़र्ज़)

- **रुकू फ़र्ज़ है** इसका सही तरीक़ा यह है कि-
- घुटनों को हाथ से इस तरह पकड़ लें कि हथेलियाँ घुटनों पर हों।

- उंगलियाँ ख़ूब फैली हों, मिली हुई और एक तरफ़ को न हों।
- पीठ सीधी बिछी हुई हो और सिर उसकी सीध में रहे, ऊँचा नीचा न हो।

- **औरतें ज़्यादा न झुकें** बस इतना कि हाथ घुटनों तक पहुँच जायें और उंगलियाँ भी मिली हुई रखें और टाँगे भी थोड़ी झुका लें।

➢ **रुकू में कम से कम तीन बार यह तस्बीह पढ़ें इसका पढ़ना सुन्नत है –**

➢ **तस्मी कहते हुए सीधे खड़े हो जायें यह भी सुन्नत है– जमाअत में हों तो यह सिर्फ़ इमाम कहेगा मुक़तदी नहीं।**

➢ **रुकू के बाद कमर बिल्कुल सीधी कर के खड़े हो जायें। इसे क़ौमा कहते हैं।**

7. क़ौमा (वाजिब)

➢ **क़ौमा के दौरान "तहमीद" कहें यह सुन्नत है**

رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ

ऐ हमारे रब! सब ख़ूबियाँ तेरे ही लिये हैं
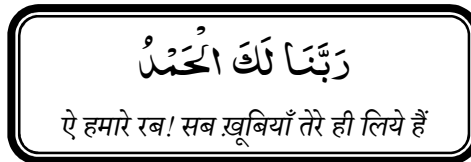
➢ **अब तकबीर "अल्लाहु अकबर" कहते हुए सजदे में जायें।**

8. सजदा (फ़र्ज़)

- सजदे में इस तरह जायें कि पहले घुटने ज़मीन पर रखें,
- फिर हाथ ज़मीन पर टेकें,
- फिर दोनों हाथों के बीच में सिर ऐसे रखें कि माथा और नाक की हड्डी ज़मीन पर अच्छी तरह लगी हो।
- पहले नाक ज़मीन पर रखें, फिर माथा।
- जिस्म के हिस्से आपस में मिले न हों, बाज़ू करवटों से, पेट रानों से, रानें पिंडलियों से, पिंडलियाँ ज़मीन से अलग हों।
- दोनों पाँव की सब उंगलियाँ क़िबले की तरफ़ हो और उनके पेट ज़मीन से जमे हों।
- हथेलियाँ बिछी हों और उंगलियाँ क़िबले की तरफ़ हों।
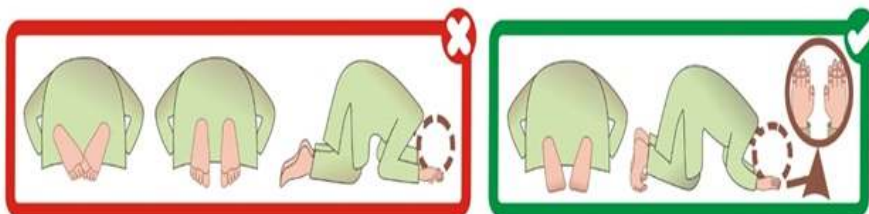
- **औरतें** अपने जिस्म को ज़्यादा से ज़्यादा समेट कर सजदा करें और बाज़ू करवटों से, पेट रानों से, राने पिंडलियों से और पिंडलियाँ ज़मीन से मिली हुई हों।

➢ **सजदे में कम से कम तीन बार यह तस्बीह पढ़ें यह तस्बीह पढ़ना सुन्नत है।**

➢ **अब तकबीर "अल्लाहु अकबर" कहते हुए सजदे से उठें।**

- सजदे से ऐसे उठें कि पहले माथा उठायें, फिर नाक, फिर हाथ।

➢ **सजदे से उठ कर इत्मिनान से बैठ जायें। इसे "जलसा" कहते हैं।**

9. जलसा (जलसा वाजिब है)

दो सजदों के दरमियान इत्मिनान से बैठने को जलसा कहते हैं। जलसे में इस तरह बैठें-

- दाहिना पैर ऐसे खड़ा करें कि उसकी उंगलियाँ ज़मीन पर जमी रहें और क़िबले रुख़ हों।
- बायाँ पैर बिछा कर उस पर सीधा बैठ जायें।
- हथेलियाँ फैला कर रानों पर घुटनों के पास रखें कि दोनों हाथों की उंगलियाँ भी क़िबले को हों।
- **औरतें** बैठने के लिये अपने दोनों पैर दाहिनी तरफ़ निकाल लें और बायें कूल्हे पर बैठ जायें।

➢ **फिर दूसरा सजदा करें** – थोड़ा रुक कर तकबीर "अल्लाहु अकबर" कहते हुए दूसरा सजदा करें।

➢ **अब दूसरी रकअत के लिये खड़े हों** – तकबीर "अल्लाहु अकबर" कहते हुए खड़े हों।

- इस तरतीब से उठें कि पहले माथा उठायें, फिर नाक, फिर हाथों को घुटनों पर रखकर खड़े हो जायें।

10. दूसरी रकअत

➢ **दूसरी रकअत में पहले की तरह "बिस्मिल्लाह" पढ़कर "अलहम्द शरीफ़" पढ़ें और कोई सूरत मिलायें, फिर उसी तरह रुकू और सजदा करके पहले बताये गये तरीक़े से बैठ जायें और क़ायदा करें।**

11. क़ायदा-ए-ऊला (वाजिब)

- यह वाजिब है दो रकअतों के बाद बैठकर इसमें तशह्हुद यानि अत्तहियात पढ़ी जाती है जिसका पढ़ना वाजिब है।
- भूले से अत्तहियात पढ़ना रह जाये तो सजदा-ए-सहव करना होगा। **क़ायदा** में ऐसे बैठे-

- जब **"अशहदु अल लाइलाहा"** के **'ला'** पर पहुँचें तो दाहिने हाथ की बीच की उंगली और अंगूठे का हलक़ा बनायें और छोटी ऊँगली और उसके पास वाली उंगली को हथेली से मिला दें और लफ़्ज़ **'ला'** पर शहादत की उंगली उठायें और **'इल्लल्लाह'** पर गिरा दें और सब उंगलियाँ फ़ौरन सीधी कर लें।

➢ **नमाज़ में बैठकर क़ायदा में अत्तहियात पढ़ें:-**

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبَاتُ ؕ

सारी ज़बानी, बदनी और माली इबादतें अल्लाह के लिए हैं

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ ؕ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ ۝

सलाम हो आप पर या नबी और अल्लाह की रहमत और बरकतें, सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर।

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ۝

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उसके बन्दे और रसूल हैं।

➢ **दो से ज़्यादा रकअतें पढ़नी हैं** तो खड़े होकर और इसी तरह बाक़ी नमाज़ पढ़ें मगर फ़र्ज़ों की इन रकअतों में अलहम्द शरीफ़ के साथ सूरत नहीं मिलाई जायेगी।

➢ **आख़िरी रकअत में बैठने को क़ायदा-ए- आख़ीरा कहते हैं यह फ़र्ज़ है।**

12. क़ायदा-ए-आख़ीरा (फ़र्ज़)

➢ क़ायदा-ए-आख़ीरा के बाद नमाज़ ख़त्म करेगें इसमें तशह्हुद (अत्तहियात) के बाद दुरूद शरीफ़ पढ़ते हैं।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ

या अल्लाह! दुरूद भेज मुहम्मद पर और उनकी आल पर

كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ؕ

जिस तरह तूने दुरूद भेजा इब्राहीम पर और उनकी आल पर बेशक तू ही है सब ख़ूबियों वाला इज़्ज़त वाला।

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ

या अल्लाह! बरकत नाज़िल कर मुहम्मद पर और उनकी आल पर

كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ؕ

जिस तरह तूने बरकत नाज़िल की इब्राहीम पर और उनकी आल पर। बेशक तू ही है सब ख़ूबियों वाला इज़्ज़त वाला।

➢ **दुआ पढ़ें – नीचे दी गई दुआओं में से कोई एक दुआ पढ़ें –**

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ ظُلْمًا كَثِيْرًا وَّلَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ

ऐ अल्लाह! मैंने अपनी जान पर बहुत ज़ुल्म किया है और बेशक तेरे सिवा गुनाहों का बख़्शने वाला कोई नहीं है

فَاغْفِرْ لِىْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِىْ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝

तू अपनी तरफ़ से मेरी मग़फ़िरत फ़रमा और मुझ पर रहम कर। बेशक तू ही बख़्शने वाला मेहरबान है।

➢ **या यह दुआ पढ़ें**

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

ऐ अल्लाह! ऐ हमारे रब! तू हमें दुनिया में भलाई दे और आख़िरत में भलाई दे और हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा।

➢ नमाज़ से बाहर आने के लिये दोनों तरफ़ मुँह फेर कर सलाम करें इसे ख़ुरूज बेसुनएही कहते हैं।

13. ख़ुरूज बेसुनएही (फ़र्ज़)

➢ इसका मतलब है अपने इरादे से नमाज़ ख़त्म करना यानि क़ायदा-ए-आख़ीरा के बाद कोई ऐसा काम जिससे नमाज़ जाती रहे जानबूझ कर करना इसके लिये सलाम किया जाता है। नमाज़ से बाहर आने के लिये पहले दाहिने कंधे की तरफ़ मुँह करके **"अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह"** कहें, फिर बायें कंधे कि तरफ़। इसमें लफ़्ज़ "**सलाम**" कहना वाजिब है।

14. वित्र की नमाज़ (तरीक़ा और ज़रूरी मसाइल)

- वित्र की नमाज़ वाजिब है और इशा की नमाज़ के बाद अदा की जाती है।
- वित्र पढ़ने का सही वक़्त तो रात का पिछला पहर है, लेकिन हमारे प्यारे नबी ﷺ ने उम्मत की आसानी के लिये वित्र को इशा के बाद पढ़ने का हुक्म दिया।
- नमाज़े वित्र तीन रकआत हैं और इसमें क़ायदा-ए-ऊला वाजिब है और क़ायदा-ए-ऊला में सिर्फ़ अत्तहिय्यात पढ़कर खड़ा हो जाए न दुरूद पढ़े न सलाम फेरे जैसे मग़रिब में करते हैं उसी तरह करे। और अगर क़ायदा-ए-ऊला में भूलकर खड़ा हो गया तो लौटने की इजाज़त नहीं बल्कि सजदा-ए-सहव करे।
- वित्र की तीनों रकअतों में क़िरात फ़र्ज़ है और हर एक में सूरा-ए-फ़ातिहा के बाद सूरत मिलाना वाजिब है।
- तीसरी रकअत में क़िरात से फ़ारिग़ होकर रुकू से पहले कानों तक हाथ उठा कर तकबीर **अल्लाहु अकबर** कहे जैसे तकबीरे तहरीमा में करते हैं फिर हाथ बाँध ले और **दुआ-ए-क़ुनूत** पढ़ें। दुआ-ए-क़ुनूत से पहले तकबीर कहना वाजिब है
- **दुआ-ए-क़ुनूत का पढ़ना वाजिब है**

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِیْنُكَ وَ نَسْتَغْفِرُكَ وَ نُؤْمِنُ بِكَ وَ نَتَوَكَّلُ عَلَیْكَ

इलाही हम तुझसे मदद तलब करते हैं और मग़फ़िरत चाहते हैं और तुझ पर ईमान लाते हैं और तुझ ही पर भरोसा करते हैं

وَ نُثْنِیْ عَلَیْكَ الْخَیْرَ وَ نَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَ نَخْلَعُ وَ نَتْرُكُ مَنْ یَّفْجُرُكَ

और हर भलाई के साथ तेरी सना करते हैं और हम तेरा शुक्र करते हैं नाशुक्री नहीं करते और हम जुदा होते हैं और उस शख़्स को छोड़ते हैं जो तेरा गुनाह करे।

اَللّٰهُمَّ اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّیْ وَ نَسْجُدُ وَاِلَیْكَ نَسْعٰی وَ نَحْفِدُ وَ نَرْجُوْا رَحْمَتَكَ

ऐ अल्लाह हम तेरी ही इबादत करते हैं और तेरे ही लिए नमाज़ पढ़ते हैं और सजदा करते हैं और तेरी ही तरफ़ दौड़ते और सई करते हैं और तेरी रहमत के उम्मीदवार हैं

وَ نَخْشٰی عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ

और तेरे अज़ाब से डरते हैं बेशक तेरा अज़ाब काफ़िरों को पहुँचने वाला है।

- रमज़ान शरीफ़ के अलावा और दिनों में वित्र जमाअत से न पढ़ें।
- वित्र का सलाम फेरकर तीन बार "**सुब्हानल मलिकिल क़ुद्दूस**" कहना सुन्नत।

- वित्र के बाद दो रकअत नफ़्ल पढ़ना बेहतर है।
- वित्र की क़ज़ा भी वाजिब है चाहे जितना वक़्त गुज़र जाये ।

15. नमाज़ फ़ासिद करने वाली चीज़ें (यानि जिनसे नमाज़ टूट जाती है।)

- नमाज़ में बातचीत करने से।
- नमाज़ के दौरान हँसने से जबकि कोई इतनी ज़ोर से हँसे कि बराबर मे खड़े शख़्स तक आवाज़ पहुँच जाये तो नमाज़ भी टूट जाती है और वुज़ू भी चाहे बराबर में कोई खड़ा हो या नहीं ।
- सलाम करने या सलाम का जवाब देने से, छींक आने पर "**अलहम्दुलिल्लाह**" कहने से या जवाब में "**यरहमुकल्लाह**" कहने से, ख़ास मौक़ों पर कहे जाने वाले कलमें जैसे **अलहम्दुलिल्लाह, सुब्हानल्लाह, ला इलाहा इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैही राजिऊन"** वग़ैरा कहने से।
- अज़ान का जवाब देने से।
- दर्द या मुसीबत की वजह से निकलने वाले लफ़्ज़ जैसे आह, ओह, उफ़, तुफ़ निकलने से या आवाज़ से रोने से।
- नमाज़ में देखकर क़ुरआन पढ़ने से।
- कोई ऐसा काम जो नमाज़ से न हो, जिसको करते देखकर दूर से देखने वाला यह समझे कि नमाज़ नहीं पढ़ रहा उससे नमाज़ टूट जाती है। ऐसे काम को "अमल-ए-कसीर" कहते है। जैसे एक रुक्न में तीन बार खुजाना।
- नमाज़ के दौरान खाने पीने से नमाज़ टूट जाती है चाहे जानबूझ कर हो या भूल से। थोड़ा हो या ज़्यादा।
- नमाज़ के दौरान वुज़ू टूट जाने से, जिस्म या कपड़े में इतनी नापाकी लग जाने से जिससे नमाज़ नहीं होती, सत्र खुलने से।
- क़िबले से रुख़ फेरने से। रुख़ फेरने का मतलब है कि सीना ख़ास काबे की सिम्त से 45 डिग्री हट जाये।
- **तकबीराते इंतक़ाल** (यानि एक रुक्न से दूसरे रुक्न में जाने के लिये "**अल्लाहु अकबर**" कहना) इसमें अल्लाह या अकबर में अलिफ़ को बढ़ा कर आल्लाह या आकबर कहा या बे के बाद अलिफ़ बढ़ाया यानि अकबार कहा नमाज़ फ़ासिद हो जायेगी और तहरीमा में ऐसा हुआ तो नमाज़ शुरू ही न हुई।

16. सजदा-ए-सहव कब करना चाहिये?

- जो चीज़ें नमाज़ में वाजिब हैं अगर उनमें से कोई वाजिब भूल से छूट जायें या तो उनकी कमी को पूरा करने के लिए सजदा-ए-सहव करना वाजिब है।
- क़िरात के दौरान या एक रुकुन अदा करने के बाद दूसरे रुकुन की अदायगी के मौक़े पर सोचने लगा और इतनी देर हो गई कि तीन बार **"सुब्हानल्लाह"** कह सकें तो सजदा-ए-सहव वाजिब है।
- अगर जानबूझ कर कोई वाजिब छोड़ा तो सजदा-ए-सहव काफ़ी नहीं बल्कि नमाज़ दोहराना वाजिब है।

सजदा-ए-सहव का तरीक़ा यह है कि नमाज़ की आख़िरी रकअत में अत्तहियात पढ़ने के बाद दाहिनी तरफ़ सलाम फेर कर दो सजदे करें फिर शुरू से अत्तहियात, दुरूद शरीफ़ और फिर दुआ वग़ैरा सब पढ़ कर सलाम फेर दें।

इन बातो के छूटने से सजदा-ए-सहव नहीं

वह बातें जो नमाज़ में सुन्नत हैं या मुस्तहब हैं जैसे तअव्वुज़ (आऊज़ुबिल्लाह), तस्मिया (बिस्मिल्लाह), आमीन, तकबीराते इंतक़ाल (नमाज़ के एक रुक्न से दूसरे रुक्न में जाते हुए कही जाने वाली तकबीर (अल्लाहु अकबर), और तस्बीहात वग़ैरा के छूटने से सजदा-ए-सहव नहीं बल्कि नमाज़ हो गई।

****